Part – 1

प्रश्न (7.) श्री जीवकान्त यशस्वी जीक 'सूर्यकक मृत्युक प्रक्रिया' कविता के अर्थ स्पष्ट करू ।

उतर - मैथिली साहित्य जगत् मे श्री जीवकन्त यशस्वी कथाकर , कवि आ उपन्यासकार छथि । मैथिलीक नव कविता मे संकलित अछि । सूर्यक मृत्युक प्रक्रिया प्रतीकात्मक कविता अछि । सूर्येसँ हमरा लोकनिक जीवन अछि । तहिना मनुक्ख छी त अन्ने खा क जीबै छी । मुदा अन्न

उपजैनिहार कें जकाँ कहिओ अवकाश नहि ।
ओ कोल्हुआ बड़द थिक।

“सूर्य कोल्हुआ बड़द जकाँ जोतल अछि

ओकर आगाँ अन्हार, ओकर पाछा अन्हार

ओकर ऊपर अन्हार ,ओकर नीचाँ अन्हार

सूर्य अन्हारक पानि पर गलैत हिमखंड”

जाहिना सूर्यक प्रक्रिया अछि ताहिना खेतिहर मजदूरक भोरसँ सांक्ष धरि काजे-काज ।परंच ओकरा जीवनमे अन्हारे - अन्हार छैक ।जेना सूर्यक प्रखर ज्योतिसँ हिमखंड गलैत अछि

ताहिना खेतिहर मजदूर गलि रहत अछि । ओ त क्रीतदास थिक। ऋतुचक्र सतत् टिटकारी दैत ठेलि रहल छैक । ओकरा जीवनक विड्म्बना ओकरा पीठक दाग देखि सकैत छी ।हमरा जुहिया किओ कहत जे हाड़ जागल माल बन्हले मरि गेल त ने हम हँसब आ ने कानब । मात्र पैघ निस्सांस छोड़ब।

कविकेँ वर्तमान व्यवस्थामे दोष अछि से उजागर कैल अछि । किओ कमाइत - कमाइत मरि रहल अछि , किओ खाइत - खाइत ।एहि भेदभावपूर्ण व्यवस्थाक प्रति आक्रोस।